DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कारक प्रकरण

Part -6

LIVE 16-05-2024 05:00 PM

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

सूत्रः "ध्रुवमपायेऽपादानम् "

वृत्तिः अपायो विश्लेषः, तस्मिन् साध्ये ध्रुवमवधिभूतं कारकम् अपादानं स्यात् ।

सूत्रार्थः विश्लेष (वियोग, जुदाई या अलग होने) को अपाय कहते हैं। अपाय में जो अवधि बना हो वह कारक अपादानसंज्ञक होता है। यहाँ ध्रुवम् का अर्थ अवधिभूतं (स्थिर, अडिग) है तथा अपाय पद का अर्थ विश्लेष है (विच्छेद)। दूरीकरण की क्रिया में कोई वस्तु जहाँ से अलग होती है, उस कारक में अपादान संज्ञा होती है।

सूत्रः " अपादाने पञ्चमी"

वृत्तिः अपादाने कारके पञ्चमी विभक्तिर्भवति ।

सूत्रार्थः अनुक्त अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे: सः ग्रामाद् आयाति । (वह गाँव से आता है |)

- रामः धावतः अश्वात् पतति । (राम दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।)
- श्यामः चलतः बसयानात् पतति । (श्याम चलती बस से गिरता है।)
- वृक्षात् पत्राणि पतन्ति । (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।)
- भवनात् बालकः पतति। (भवन से बालक - गिरता है |)
- मोहनः गृहात् आयाति । (मोहन घर से आता है |)

वार्तिकः "जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् "

जुगुप्सा (घृणा करना/निन्दा करना), विराम (रुकना / ठहराव / थम हटना), प्रमाद (लापरवाही / आलस्य/ असावधानी) इन सभी अर्थ वा धातुओं के योग में पञ्चमी विभक्ति होती हैं।

जैसे धार्मिकः पापात् जुगुप्सते । (धार्मिक पाप से घृणा / निन्दा करता है ।)

- सज्जनः दुर्जनात् जुगुप्सते। (सज्जन दुर्जन से घृणा / निन्दा करता है |)
- छात्रः अध्ययनात् प्रमाद्यति । (छात्र अध्ययन से लापरवाही / आलस्य करता है।)
- रामः अधर्मात् विरमति । (राम अधर्म से हटता है ।)
- सः दुष्टेभ्यः जुगुप्सते। (वह दुष्टों की निन्दा / घृणा करता है ।)
- रावणः रामात् जुगुप्सते । (रावण राम से घृणा करता है ।)

सूत्रः " वारणार्थानामीप्सितः "

वृत्तिः वारणार्थानाम् धातूनाम् प्रयोगे य ईप्सितोऽर्थः तत् कारकमपादानसंज्ञं भवति।

सूत्रार्थः वारण अर्थ में अर्थात् हटाने की क्रिया में जहां से हटाया जाए उस ईप्सित कारक की अपादान संज्ञा होती है।

जैसेः

- किसानः यवेभ्यः गां वारयति । (किसान जौ (एक फसल) से गाय को हटाता है |)
- पिता अग्नेः सर्पं वारयति । (पिता आग से साँप को हटाता है ।)
- आरक्षकः गृहात् चौरं वारयति । (पुलिस घर से चोर को हटाता है ।)

सूत्रः " अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति "

वृत्तिः व्यवधाने सति यत्कर्तृकस्य आत्मनः दर्शनस्य अभावम् इच्छति तदपादानं स्यात्।

सूत्रार्थः अन्तर्ध्यान (छिपना / छुपना) होने की क्रिया में जिससे छिपा जाए उस कारक की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे: कृष्णः मातुः निलीयते । (कृष्ण माता से छिपता है ।)

- चौरः आरक्षकात् निलीयते । (चोर पुलिस से छिपता है ।)
- पुत्रः पितुः निलीयते । (पुत्र पिता से छिपता है।)
- शिष्य : गुरोः निलीयते । (शिष्य गुरु से छिपता है |)

सूत्रः " आख्यातोपयोगे"

वृत्तिः नियमपूर्वकविद्यास्वीकारे वक्ता अपदानसञ्ज्ञः स्यात् ।

सूत्रः नियमपूर्वक विद्या स्वीकार (विद्या अध्ययन) करने में जिससे (शिक्षक, गुरु, आचार्य, उपाध्याय, व्याख्याता, अध्यापक) विद्या स्वीकार की जाती है, उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे:

- शिष्यः गुरोः अधीते । (शिष्य गुरु से पढ़ता है।)
- रामः अध्यापकात् अधीते । (राम अध्यापक से पढ़ता है |)
- देवदत्तः उपाध्यायाद् अधीते । (देवदत्त उपाध्याय से पढ़ता है |)

सूत्रः "जनिकर्तुः प्रकृतिः "

वृत्तिः जायमानस्य हेतुः अपादानं स्यात्।

सूत्र: उत्पन्न होने की क्रिया में जहाँ से जन्म या उत्पन्न होता है.. उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे: ब्रह्मणः प्रजाः उत्पद्यन्ते / प्रजायन्ते । (प्रजा ब्रह्मा से उत्पन्न होती है।)

- कामात् क्रोधोऽभिजायते। (काम से क्रोध उत्पन्न होता है।)
- गोमयाद् वृश्चिकाः जायन्ते । (गोबर से बिच्छू पैदा होते हैं)
- सङ्गात् कामः जायते । (साथ रहने से काम उत्पन्न होता है)
- कामात् क्रोधः उत्पद्यते । (काम से क्रोध उत्पन्न होता है |)
- बुद्धिनाशात् सर्वनाशः जायते । (बुद्धिनाश से सर्वनाश हो जाता है।)

सूत्रः "भुवः प्रभवः " (

वृत्तिः- भूकर्तुः प्रभवो यः, तत् कारकमपादानसंज्ञम् भवति।

सूत्रार्थः जहाँ से प्रकाशित होया जाता है या नदी आदि के प्रथम प्रकाशन स्थल की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसेः

- हिमालयात् गङ्गा प्रभवति । (हिमालय से गङ्गा निकलती है।)
- गङ्गा हिमवतः प्रभवति / निर्गच्छति । (हिमालय से गङ्गा निकलती है ।)
- विराटनगरात् बाणगङ्गा प्रभवति । (विराट नगर से बाणगङ्गा बहती है।)

सूत्र: "पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्"

वृत्तिः पृथक् विना नाना इत्येतैर्योगे तृतीया विभक्तिर्भवति, अन्यतरस्यां पञ्चमी च

सूत्रार्थः पृथक्, विना और नाना पदों के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे:

- धर्मं/ धर्मेण / धर्मात् वा विना गतिर्नास्ति । (धर्म के बिना गति नहीं होती है।)
- रामं / रामेण /रामात् वा पृथक् सीता जीवितुं न शक्नोति । (राम के बिना सीता जीवित नहीं रह सकती ।)
- जलं/जलेन/जलात् नाना जीवनं नास्ति । (जल के अभाव में जीवन नहीं है ।)
- ज्ञानं / ज्ञानेन / ज्ञानात् पृथक् जीवनं नास्ति । (ज्ञान से अलग जीवन नहीं है।)
- विद्यां / विद्यया/विद्यायाः नाना सुखं न मिलति । (विद्या के अभाव में सुख नहीं मिलता है ।)

सूत्रः "पञ्चमी विभक्ते "

वृत्तिः विभागो विभक्तम् । निर्धार्यमाणस्य यत्र भेद एव तत्र पञ्चमी स्यात् ।

सूत्रार्थः विभाजन (अलग बतलाना) के अर्थ में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। और जब किन्ही दो में से एक को कम या ज्यादा के द्वारा अलग से दर्शाया या दिखाया जाता है तो विभाजन करने के लिए तरप् ईयसुन् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जिससे कम या ज्यादा बताया जाए उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

जैसेः रामः मोहनात् चतुरतरः । (राम मोहन से चतुर है।)

- सीता रामात् लघुतरा / लघीयसी । (सीता राम से छोटी है।)
- मोहनः सुरेशात् पटुतरः / पटीयान् । (मोहन सुरेश से पटुतर है |)

सूत्र - भीत्रार्थानां भयहेतुः

वृत्तिः भयार्थानां त्राणार्थानां च प्रयोगे भयहेतुरपादानं स्यात् । चोराद्बिभेति । चोरात्त्रायते । भयहेतुः किम् ? अरण्ये विभेति त्रायते वा ।

सूत्रानुवाद एवं व्याख्या - 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' इस सूत्र से 'अपादानम्' इस पद की अनुवृत्ति है । यह अपादान संज्ञा करने वाला सूत्र है । 'भीत्रार्थानां यह षष्ठ्यन्त पद है । 'भयहेतुः' यह प्रथमान्त पद है । भय के कारण को भयहेतु कहते हैं। चोर से डरता है, यहाँ पर भय का कारण चोर है। इस प्रकार भयार्थक और त्राणार्थक = रक्षणार्थक का प्रयोग होने पर भयहेतु (भय के कारण) की अपादान संज्ञा होती है। यह सूत्रार्थ निष्पन्न होता है। भाष्यकार ने बुद्धिपरिकल्पित अपाय को मानकर इस सूत्र का प्रत्याख्यान कर दिया है।

उदाहरण - चोराद्विभेति – (चोर से डरता है) । चोरात्त्रायते (चोर से रक्षा करता है) । यहाँ पर भयहेतु चोर है। इसलिये प्रकृतसूत्र से चोर की अपादान संज्ञा होती है तथा अपादाने पंचमी से पंचमीविभक्ति होकर उक्त उदाहरण की सिद्धि होती है।

अब यहाँ यह शंका होती है कि इस सूत्र में भयहेतुः यह पद क्यों रखा है। इसका उत्तर देते हुये दीक्षित जी लिखते हैं कि अरण्ये विभेति त्रायते वा । (जंगल में डरता है या रक्षा करता है) इस उदाहरण में अरण्यः (जंगल) भयहेतु नहीं है । इसकी अपादान संज्ञा प्रकृत सूत्र से न हो जाए, इसलिये इस सूत्र में 'भयहेतु' यह पद रखा है।

चौराद् बिभेति

बालकः सर्पात् बिभेति

सूत्र - पराजेरसोढः

वृत्ति - पराजेः प्रयोगेऽसह्योऽर्थोऽपादानं स्यात् ।

अध्ययनात्पराजयते । ग्लायतीत्यर्थः । असोढः किम् ? शत्रून् पराजयते । अभिभवतीत्यर्थः ।

परा जि असोढः => असहनीय

छात्रः अध्ययनात् पराजयते

उदाहरण -- अध्ययनात्पराजयते। यद्यपि जि धातु परस्मैपदी है फिर भी 'विपराभ्यां जेः' इस सूत्र से आत्मनेपद होता हैं इस पराजयते में आत्मनेपद होता है । इस उदाहरण में परा उपसर्ग पूर्वक जि धातु का प्रयोग होता है तथा असह्य अर्थ अध्ययन है । इसलिये अध्ययन की प्रकृ त सूत्र से अपादान संज्ञा होती है तथा अपादाने पंचमी से पंचमी विभक्ति होती है ।

- अब यहाँ यह शंका होती है कि इस सूत्र असोढ = असहय पद की क्या आवश्यकता है। तो इसका उत्तर देते हुये दीक्षित जी कहते है कि शत्रून् पराजयते (शत्रुओं को पराजित करता है) यहाँ पर 'शत्रु' असहय नहीं है परन्तु सहय है तभी तो पराजित करता है। यहाँ शत्रु की अपादन संज्ञा न हो जाय इसलिये 'असोढः' यह पद इस सूत्र में रखा गया है।

सम्बन्ध (षष्ठी विभक्ति)

सूत्रः "षष्ठी शेषे"

वृत्तिः कारकप्रातिपदिकार्थव्यतिरिक्तः स्वस्वामिभावादिसंबंधः तत्र षष्ठी स्यात् ।

सूत्रार्थः छह कारकों (अपादान, सम्प्रदान, करण, अधिकरण, कर्म कर्ता) के अलावा प्रातिपादिकार्थ से भिन्न स्व-स्वामीभाव, जनक- जन्य कार्य-कारणभाव आदि सम्बन्ध की द्योतिता होने पर षष्ठी विभक्ति हो

जैसे: एषः राज्ञः पुरुषः अस्ति । (यह राजा का आदमी है।)

- चेतनः क्षेत्रस्य स्वामी अस्ति। (चेतन खेत का मालिक है।)
- रामस्य चरणौ । (राम के चरण)
- रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत् । (राम दशरथ का पुत्र था।)

- लव - कुशौ रामस्य पुत्रौ आस्ताम् । (लव और कुश राम के पुत्र थे ।)
- तत् वृक्षस्य फलम् अस्ति । (वह वृक्ष का फल है।)
- वटस्य शाखा । (वट की शाखा ।)
- आम्रस्य रसः । (आम का रस् ।)

सूत्रः "षष्ठी हेतुप्रयोगे" हेतौ

वृत्तिः हेतुशब्दप्रयोगे हेतौ द्योत्ये षष्ठी स्यात् ।

सूत्रार्थः जब वाक्य में हेतु (कारण) शब्द का प्रयोग हो तो 'हेतु' शब्द में और हेतु के कारण में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसेः अन्नस्य हेतोः वसति। (अन्न के कारण रहता है |)

- लेखनस्य हेतोः पठति । (लेखन के कारण पढ़ता है |)
- अध्ययनस्य हेतोः वसति । (अध्ययन के कारण रहता है।)
- धनस्य हेतोः यतते । (धन के कारण प्रयत्न कर रहा है।)

धनेन यतते

सूत्रः "सर्वनाम्नस्तृतीया च"

वृत्तिः सर्वनाम्नो हेतुशब्दस्य च प्रयोगे हेतौ द्योत्ये तृतीया स्यात् षष्ठी च।

सूत्रार्थः यदि हेतु शब्द के आगे सर्वनाम शब्द आये तो हेतु शब्द तथा सर्वनाम शब्द में तृतीया और षष्ठी विभक्ति हो जाती है।

जैसे: सर्वनाम

- सः केन हेतुना वसति अथवा सः कस्य हेतोः वसति? (वह किस कारण से रहता है?)
- रामः अनेन हेतुना वसति अथवा रामः अस्य हेतोः वसति (राम इस अधिकरण से रहता है।)

अधिकरण (सप्तमी विभक्ति)

सूत्रः "आधारोऽधिकरणम्"

वृत्तिः कर्तृकर्मद्वारा तन्निष्ठक्रियाया आधारः कारकमधिकरणसंज्ञः स्यात् ।

सूत्रार्थः कर्ता और कर्म के द्वारा क्रिया की सिद्धि के लिए जिसका आश्रय लिया जाता है, उस आधार की अधिकरण संज्ञा होती है।

सूत्रः "सप्तम्यधिकरणे च "

वृत्तिः अधिकरणे सप्तमी स्यात् ।

सूत्रार्थः अनुक्त अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

आधार (जिस पर कोई वस्तु टिकी हो) और आधेय (वस्तु) के सम्बन्ध के अनुसार आधार तीन प्रकार का होता है।

1. औपश्लेषिक आधारः उपश्लेषकृत औपश्लेषिक : अर्थात् जहां आधार का आधेय के साथ संयोग आदि सम्बन्ध हो वहां औपश्लेषिक आधार होता है। यहां आधार और आधेय में भौतिक जुड़ाव होता है। जो साक्षात् दिखाई देता है, इसीलिए इसे प्रत्यक्ष आधार भी कहते हैं।

जैसे: मोहनः कटे आस्ते । (मोहन चटाई पर बैठता है)

- रतनः खट्वायां शेते। (रतन खाट पर सोता है।)
- चेतनः भूमौ तिष्ठति । (चेतन भूमि पर बैठता है ।)
- माता स्थाल्याम् ओदनं पचति । (माता थाली में भात - पकाती है।)

आधार

2. वैषयिक आधारः विषयकृतो वैषयिकः अर्थात् विषयगत सम्बन्ध से जब किसी को आधार माना जाता है तब वह वैषयिक आधार होता है। यह आधार बौद्धिक होता है। यहां आधार का सम्बन्ध किसी ना किसी विषय से पाया जाता है।

जैसे:

- मोक्षे इच्छा अस्ति । (मोक्ष के विषय में इच्छा है ।)
- पठने इच्छा अस्ति । (पढ़ने के विषय में इच्छा है।)
- व्याकरणे इच्छा अस्ति । (व्याकरण के विषय में इच्छा है ।)
- साहित्ये रुचिः । (साहित्य में रुचि)

3. अभिव्यापक आधारः जहाँ आधार के प्रत्येक अवयव में आधेय की सत्ता विद्यमान हो अर्थात् आधेय का सम्पूर्ण आध र में विस्तार या फैलाव बताया जाता है। वहां अभिव्यापक आध समझना चाहिये ।

जैसेः

- तिलेषु तैलम् अस्ति। (तिलों में तेल है |)
- सर्वस्मिन् आत्मा। (सभी में आत्मा है।)
- दध्नि सर्पिः अस्ति । (दही में घी है)
- पयसि घृतम् । (दूध में घी ।)
- मनुष्येषु मनुष्यत्वम्। (मनुष्यों में मनुष्यत्व है |)

वार्तिकः "साध्वसाधुप्रयोगे च "

वार्तिकार्थः साधु (लाभकारी) और असाधु (हानिकारी) शब्दों का प्रयोग करने पर जिसके प्रति साधु या असाधु हो, उस कारक में सप्तमी विभक्ति होती है ।

जैसेः

- कृष्णः मातरि साधुः अस्ति । (कृष्ण माता के प्रति साधु है ।)
- कृष्णः मातुले असाधुः अस्ति । (कृष्ण मामा के प्रति असाधु है |)
- अर्जुनः युधिष्ठिरे साधुः आसीत् । (अर्जुन युधिष्ठिर के प्रति साधु था ।)
- अर्जुनः कर्णे असाधुः आसीत्। (अर्जुन कर्ण के प्रति असाधु था ।)

वार्तिकः " निमित्तात्कर्मयोगे "

वार्तिकार्थः कर्म का योग होने पर निमित्त (कारण, हेतु, प्रयोजन, उद्देश्य) में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे: व्याधः चर्मणि द्विपिनं हन्ति । (शिकारी चमड़े के लिए चीते को मारता है |)

- दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति । (दान्तो के लिए हाथी को मारता है।)
- केशेषु चमरीं हन्ति । (बालों के लिए चमरी गाय को मारता है।)
- सः धने बालकम् अपहरति । (वह धन के लिए बालक का अपहरण करता है)

सूत्रः "षष्ठी चानादरे"

वृत्तिः अनादराधिक्ये भावलक्षणे षष्ठीसप्तम्यौ स्तः ।

सूत्रार्थः अनादर अर्थ में जिसका अनादर किया जाए, उसमें षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे:

- रूदतः दशरथस्य रामः वनम् गतः ।
  (रोते हुए दशरथ को छोड़कर राम वन चला गया ।)
- रुदति दशरथे रामः वनम् गतः ।
  (रोते हुए दशरथ को छोड़कर राम वन चला गया ।)

- रुदतः बालकस्य माता गतवती ।
  (रोते हुए बालक को छोड़कर माता चली गयी ।)
- रुदति बालके माता गतवती ।
  (रोते हुए बालक को छोड़कर माता चली गयी ।)

सूत्रः "यस्य च भावेन भावलक्षणम्"

वृत्तिः यस्य क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते, ततः सप्तमी स्यात् ।

सूत्रार्थः जहाँ एक क्रिया के बाद लगातार दूसरी क्रिया हो, तो वहां पूर्वकालिक क्रिया (पहले से चल रही क्रिया में) में सप्तमी विभक्ति होती है।

क्रिया में विभक्ति होने के कारण इसे क्रिया - सप्तमी, सती-सप्तमी या भाव - सप्तमी भी कहते है।

जैसेः

- सूर्य अस्तं गते पक्षिणः नीडं गताः । (सूर्य अस्त होते ही पक्षि घोसलें में चले गये।)

- रामे वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत्। (राम के वन में जाते ही दशरथ ने प्राण त्याग दिए ।)
- शिशौ सुप्ते माता गतवती । (शिशु के सोते ही माता ही चली गई ।)
- वसन्ते सम्प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः । (वसन्त के आते ही कौआ और कोयल में अंतर हो जाता है।)

सूत्रः "यतश्च निर्धारणम्" २।३।४१

वृत्तिः जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः ।

सूत्रार्थः जब जाति, गुण, क्रिया, संज्ञा समुदाय में से एक को छाँटा जाता है, तो इसे निर्धारण कहते हैं। निर्धारण करने में जहां से निर्धारण किया जाता है, उस समुदाय समूह की अधिकरण संज्ञा होकर सप्तमी तथा षष्ठी विभक्ति होती है।

(निर्धारण में तमप् और इष्ठन् प्रत्ययों का प्रयोग होता है।)

- नराणां / नरेषु ब्राह्मणः श्रेष्ठतमः / श्रेष्ठः ।
  (नरों में से ब्राह्मण श्रेष्ठ है।)

कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः

कविषु कालिदासः श्रेष्ठः

- प्राणिनां / प्राणिषु मानवः श्रेष्ठः ।
  (प्राणियों में से मानव श्रेष्ठ है।)
- गवां / गोषु कृष्णा बहुक्षीरा ।
  (गायों में से काली गाय बहुत दुध वाली है।)
- रसानां / रसेषु लवणरसः श्रेष्ठः ।
  (रसों में से लवणरस श्रेष्ठ है।)
- गच्छतां/गच्छत्सु धावन् शीघ्रतमः ।
  (जाने वालों में से दोड़ने वाला तेज है।)
- पठतां/पठत्सु लेखकः चतुरतमः ।
  (पढ़ने वालों में से लिखने वाला चतुरतम है |)

- कवीनां / कविषु कालिदासः श्रेष्ठः ।
  (कवियों में से कालिदास श्रेष्ठ है।)
- काव्यानां / काव्येषु नाटकं श्रेष्ठम् ।
  (काव्यों में से नाटक श्रेष्ठ है।)